डिजिटल दैनिक

साहित्य 24

www.sahitya24.com

राष्ट्रीय संस्करण

साहित्य कला और संस्कृति को समर्पित एक डिजिटल अभियान

वर्ष-05, अंक-20 | पृष्ठ-4 | डिजिटल अंक-20 | रविवार, 30 अगस्त, 2026 | संपादक हरिप्रकाश पाण्डेय | मूल्य 0, निःशुल्क

BHAGAT HOSPITALS PVT. LTD.

BHAGAT HOSPITALS
2/48-49, Janak Puri, New Delhi-110058
Tel. No.:011-45102030

BHAGAT CHANDRA HOSPITALS
RZF-1/1, Mahavir Enclave, Near Palam-Dwarka Flyover, New Delhi-110045
Tel. No.:011-45254523/24/25

BHAGAT HOSPITAL Works Wonders

E-mail : info@bhagathospital.com, website : bhagathospital.com *NABH accreditation for both the hospitals

Delhi's Premier Family Health Care Facility with Professionally Managed Medical Staff Contact No. 9811279079

A NABH Accredited Hospital

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर डॉ. सविता चड्ढा जी के जन्मदिन पर विशेषांक पत्रिका का लोकार्पण

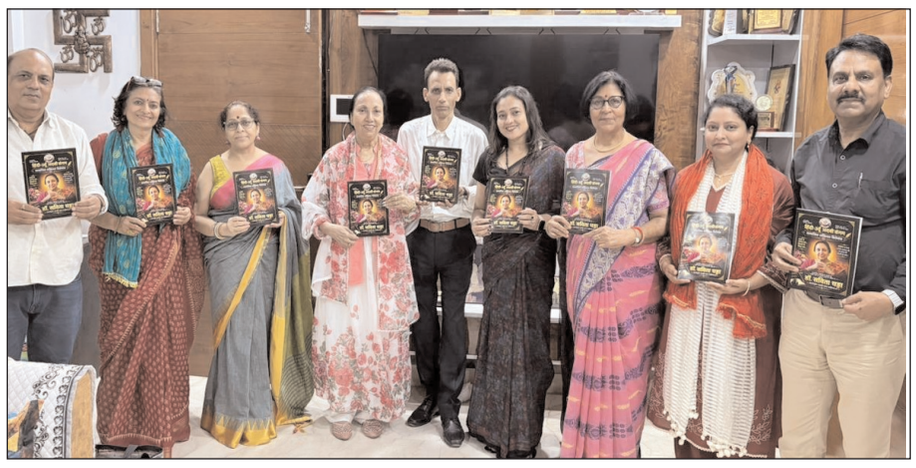

28 अगस्त 2026 को रक्षाबंधन के पावन अवसर पर हरियाणा गौरव सम्मान से सम्मानित, विश्वविख्यात साहित्यकार डॉ. सविता चड्ढा के जन्मदिन के शुभ अवसर पर उनके निवास पर हिंदी-उर्दू अदबी संगम की ह्यसामाजिक शख्सियत विशेषांकह्ल पत्रिका के प्रवेशांक का लोकार्पण किया गया।

इस विशेषांक का संपादन हिंदी-उर्दू अदबी संगम के संस्थापक एवं अध्यक्ष डॉ. सैयद अली अख़्तर नकवी ने किया है। पत्रिका को आकार देने में कार्यकारी संपादक अजीमा नकवी, संपादकीय परामर्श इंदुकांत अंगिरस तथा संपादकीय सहयोग शाहाना परवीन का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

इस अवसर पर अदबी संगम परिवार की ओर से डॉ. सविता चड्ढा को जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएँ दी गईं।

कार्यक्रम में डॉ. सविता चड्ढा , इंदुकांत अंगिरस , डॉ. कल्पना पाण्डेय , डॉ. राकेश सिंह , डॉ. अंजु अग्रवाल , शकुंतला मित्तल , चंद्रकांत मित्तल , अब्दुल वाहिद अंसारी , नाजरीन अंसारी ज सोनल चड्ढा तथा अजीमा नकवी सहित अनेक साहित्यकार एवं गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

इस अवसर पर सभी अतिथियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए और डॉ. सविता चड्ढा के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं। डॉ. सविता चड्ढा ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाशित इस विशेषांक के लिए संपादक मंडल का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का अत्यंत गरिमापूर्ण एवं खूबसूरत संचालन शकुंतला मित्तल ने किया।

कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष डॉ. सैयद अली अख़्तर नकवी ने कार्यक्रम को सफल बनाने तथा रक्षाबंधन जैसे पावन पर्व के दिन अपनी व्यस्तताओं के बावजूद उपस्थित होकर इस खुशी में शामिल होने के लिए सभी अतिथियों का हृदय की गहराइयों से आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया।

उन्होंने उन सभी शुभचिंतकों और साहित्यकारों के प्रति भी विशेष आभार व्यक्त किया, जो किसी कारणवश कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके, लेकिन फोन एवं व्हाट्सऐप के माध्यम से इस खुशी में जुड़े रहे और अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। यह आयोजन साहित्य, स्नेह और आत्मीयता का सुंदर संगम बनकर सभी के हृदय में अपनी सुखद स्मृति छोड़ गया।

प्रस्तुति
संयोजक डॉ. सैयद अली अख़्तर नकवी अध्यक्ष, हिंदी-उर्दू अदबी संगम

गुरु विरजानंद मार्ग, विकासपुरी, नई दिल्ली में प्लॉग रन आयोजित

पर्यावरण संरक्षण गतिविधि, जनक जिला की ओर से आज गुरु विरजानंद मार्ग, विकासपुरी में बैंक ऑफ महाराष्ट्र से पुलिस स्टेशन तक डिवाइडर पर प्लॉग रन आयोजित किया गया। अभियान के दौरान प्लास्टिक एवं अन्य कचरा एकत्र कर मार्ग और आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ बनाने का प्रयास किया गया।

इस अभियान में पूर्व प्रधानाध्यापिका एवं जिला कचरा प्रबंधन प्रमुख श्रीमती बीना जी, युवा शक्ति प्रमुख डॉ. नेहा गुप्ता जी तथा युवा शक्ति टोली सदस्य श्रीमती शालिनी गुप्ता जी ने सक्रिय सहभागिता की।

इस अवसर पर सभी सदस्यों एवं नागरिकों से आग्रह किया गया कि वे अपने-अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखें तथा प्लॉग रन जैसे जनसहभागिता आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से समाज को जोड़कर स्वच्छ, सुंदर एवं हरित पर्यावरण के निर्माण में योगदान दें।

स्वच्छ परिसर – हरित परिसर – स्वस्थ समाज

सादर

पर्यावरण संरक्षण गतिविधि जनक जिला

एक लिफाफा धूप 'दोहा संग्रह'

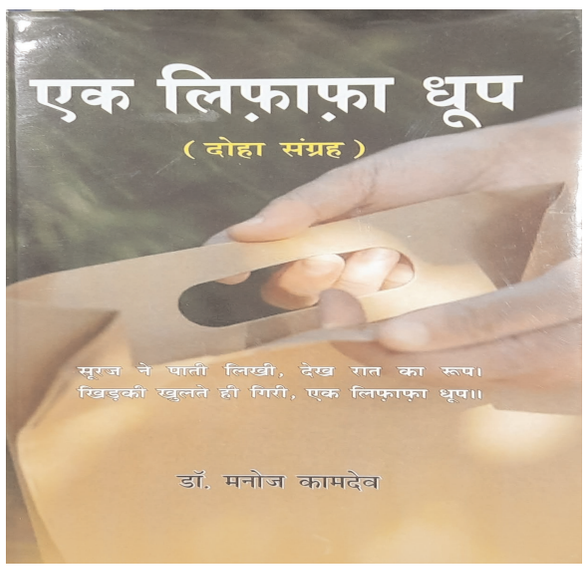

एक लिफाफा धूप दोहा संग्रह यदि पढ़ लिया तो सचमुच प्रतीत होता है मानो जाड़े के दिनों में मन-मस्तिष्क और शरीर पर नरम खिली धूप का असर हो गया हो! कबीर जहां ब्रज और खिचड़ी भाषा में मानव जीवन के सामाजिक, नैतिक और व्यवहारिक जीवन पर सटीक संदेश देते हुए दोहे लिखते हैं, वहीं श्री मनोज कामदेव उसी लेखन शैली को आत्मसात करते हुए आधुनिक दौर में हिंदी उर्दू शब्दकोश का प्रयोग करते हुए बेहद अर्थपूर्ण दोहे लिखते हैं। शब्द और अर्थ आपस में इस तरह समाहित रहते हैं कि थोड़ा चिंतन करने पर गहन भाव उभरते हैं और पढ़ने वाला "अश-अश" कर उठता है।

मैं केवल साधुवाद ही दे सकता हूं क्योंकि वर्तमान में यह लेखन शैली लगभग मृतप्राय है किंतु श्री मनोज कामदेव की लेखनी अनवरत रूप से सफल प्रयास करती है कि यदि हृदय से लिखा जाए तो दोहा आज भी हृदय पर गहन असर करता है। अद्भुत पुस्तक जिसे अपने पुस्तकालय में सहेज कर रखा जाना चाहिए।

:IAS vijay kumar, Special Secretary Turisum & Aviaction,Himanchal Govt.Shimla).

साहित्य 24 प्रकाशन द्वारा युवा कवयित्री गोस्वामी दिव्या भारती की पुस्तक वृन्दावन प्रेयसी का लोकार्पण सम्पन्न

नई दिल्ली, 29 अगस्त 2026।

साहित्य 24 प्रकाशन के तत्वावधान में शनिवार, 29 अगस्त को द्वारका स्थित क्रिएटिव अनलॉक, बी-180, पालम एक्सटेंशन, सेक्टर-7 में पुस्तक लोकार्पण एवं काव्य पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में युवा कवयित्री गोस्वामी दिव्या भारती की पुस्तक ह्यवृन्दावन प्रेयसीह्ल का लोकार्पण साहित्यप्रेमियों एवं गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में अलका सिन्हा, वरिष्ठ साहित्यकार उपस्थित रहीं, जबकि कृषि कुमार शर्मा, पूर्व उपसचिव, हिंदी अकादमी, दिल्ली, सारस्वत अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए।

कार्यक्रम में हरिप्रकाश पांडेय, प्रकाशक, साहित्य 24 एवं प्रेरणा दर्पण साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच तथा दास आरोही आनंद की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन प्रशांत अवस्थी प्रखर ने किया।

ह्यवृन्दावन प्रेयसीह्ल युवा कवयित्री गोस्वामी दिव्या भारती की साहित्यिक संवेदनाओं और रचनात्मक अभिव्यक्ति का संग्रह है। पुस्तक के माध्यम से प्रेम, भक्ति, संवेदना और मानवीय भावनाओं को काव्यात्मक रूप में अभिव्यक्त किया गया है। पुस्तक के लोकार्पण के साथ कवयित्री ने अपनी चुनिंदा रचनाओं का काव्य पाठ भी किया, जिसे उपस्थित साहित्यप्रेमियों ने सराहा।

इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि युवा रचनाकारों को साहित्य के क्षेत्र में मंच और प्रोत्साहन देना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। नई पीढ़ी के लेखक और कवि अपनी संवेदनाओं तथा विचारों के माध्यम से हिंदी साहित्य को नई दिशा दे सकते हैं। साहित्य 24 प्रकाशन द्वारा नए रचनाकारों की पुस्तकों को प्रकाशित कर उन्हें पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास इसी दिशा में महत्वपूर्ण पहल है।

संपादकीय

संकल्प और निष्कर्षः शब्दों के माध्यम से प्रकृति, संस्कृति और लोक-स्मृति का संरक्षण

– हरिप्रकाश पाण्डेय मुख्य संपादक, साहित्य 24

कंक्रीट से ढक सकते हैं और जंगलों को विकास के आंकड़ों में बदल सकते हैं, लेकिन क्या हम प्रकृति के खो जाने के बाद अपने भीतर बची हुई संवेदना को भी बचा पाएंगे?

यहीं साहित्य की जिम्मेदारी शुरू होती है।

एक कविता किसी सूखती नदी की पीड़ा को आवाज दे सकती है। एक कहानी किसी उजड़ते गांव की स्मृति को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचा सकती है। एक उपन्यास विकास और विनाश के बीच खड़े मनुष्य का सच सामने ला सकता है। और एक संवेदनशील पत्रकारिता समाज को उस सच से रूबरू करा सकती है जिसे हम अक्सर सुविधानुसार अनदेखा कर देते हैं।

साहित्य 24 का मानना है कि साहित्य को केवल साहित्यिक आयोजनों, पुस्तकों और पुरस्कारों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। साहित्य को समाज के बीच जाना होगा–गांवों तक, कस्बों तक, युवाओं तक और उन आवाजों तक जिन्हें मुख्यधारा में पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता।

आज डिजिटल युग में शब्दों की पहुंच पहले से कहीं अधिक है। एक कविता कुछ ही क्षणों में हजारों लोगों तक पहुंच सकती है। एक लेखक अपनी बात देश-दुनिया के पाठकों तक पहुंचा सकता है। लेकिन इस सुविधा के साथ हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ी है–हम क्या लिख रहे हैं, क्यों लिख रहे हैं और समाज पर उसका क्या प्रभाव पड़ रहा है?

हमें ऐसा साहित्य चाहिए जो केवल मनोरंजन न करे, बल्कि मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाए। ऐसा साहित्य जो प्रश्न पूछे, संवाद पैदा करे, असहमति को स्थान दे और समाज में प्रेम, करुणा तथा सह-अस्तित्व की भावना को मजबूत करे।

आज के दिन हम सभी साहित्यकारों, पाठकों और पत्रकारों से एक छोटा-सा संकल्प लेने का आग्रह करते हैं–

हम शब्दों को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज और प्रकृति के संरक्षण की जिम्मेदारी भी बनाएंगे। क्योंकि जब एक झील सूखती है तो केवल पानी कम नहीं होता, उसके साथ एक पूरा लोक, एक स्मृति और एक संस्कृति भी सूखने लगती है।

और जब साहित्य संवेदनशील रहता है, तो समाज के भीतर उम्मीद की एक नदी बहती रहती है।

बदलता सिनेमा, घटते त्योहारः सांस्कृतिक विरासत का बदलता

डॉ. विजय गर्ग

सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है। यह समाज का आईना, संस्कृति का कथाकार और बदलते सामाजिक मूल्यों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज भी है। कई दशकों तक भारतीय सिनेमा ने त्योहारों, परंपराओं, पारिवारिक रिश्तों और सांस्कृतिक जीवन को पर्दे पर जीवंत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गीत-संगीत, उत्सव, रीति-रिवाज, पारंपरिक वेशभूषा, खान-पान और सामूहिक समारोह फिल्मों का अभिन्न हिस्सा रहे हैं और उन्होंने दर्शकों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का काम किया है।

लेकिन आज सिनेमा का बदलता परिदृश्य एक अलग कहानी कहता है। कहानी कहने के तरीकों, दर्शकों की पसंद और सामाजिक जीवन में बदलाव के साथ पारंपरिक त्योहारों को मुख्यधारा की फिल्मों में पहले की तुलना में कम स्थान मिलता दिखाई देता है। दीपावली, होली, दशहरा, बैसाखी, लोहड़ी, पोंगल, ओणम, ईद और देश के अनेक क्षेत्रीय त्योहार, जो कभी फिल्मों में भावनात्मक और सांस्कृतिक गहराई जोड़ते थे, अब धीरे-धीरे हाशिए की ओर जाते दिखाई देते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि भारतीय सिनेमा से त्योहार पूरी तरह गायब हो गए हैं। वे आज भी फिल्मों, टेलीविजन, संगीत वीडियो और डिजिटल सामग्री में दिखाई देते हैं। लेकिन उनकी भूमिका बदल गई है। पहले किसी फिल्म में त्योहार का दृश्य केवल सजावट नहीं होता था। वह परिवार के पुनर्मिलन, भावनात्मक मुलाकात, पुराने मतभेदों को दूर करने, खुशी बांटने और सामाजिक मेल-जोल का महत्वपूर्ण अवसर बन सकता था। आज कई बार त्योहार केवल पृष्ठभूमि, छोटे दृश्य या व्यावसायिक प्रस्तुति तक सीमित रह जाते हैं।

इस बदलाव का एक प्रमुख कारण भारतीय परिवार की बदलती संरचना है। पुरानी फिल्मों में अक्सर बड़े परिवारों को साथ रहते हुए दिखाया जाता था, जहां त्योहार दादा-दादी, माता-पिता, बच्चों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों को एक साथ लाने का अवसर बनते थे। त्योहार सामूहिक खुशी का प्रतीक था। संयुक्त परिवारों की जगह छोटे परिवारों का बढ़ना, शहरी जीवनशैली और रोजगार के लिए पलायन ने त्योहार मनाने के सामाजिक अनुभव को भी बदल दिया है। सिनेमा स्वाभाविक रूप से इन परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करता है।

डिजिटल मनोरंजन के विस्तार ने कहानी कहने की शैली को और बदल दिया है। दर्शक अब फिल्मों और वेब सीरीज को अनेक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर देखते हैं और अक्सर तेज गति वाली कहानियों को प्राथमिकता देते हैं। निमार्ताओं के सामने दर्शकों का ध्यान बनाए रखने की चुनौती है। ऐसे वातावरण में लंबे सांस्कृतिक दृश्य, त्योहार की तैयारियां, पारंपरिक रस्में और पारिवारिक मिलन के दृश्य कम समय पा सकते हैं।

सिनेमा पर व्यावसायिक दबाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निमार्ता अक्सर ऐसे विषयों को प्राथमिकता देते हैं जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में व्यापक दर्शक मिल सकें। किसी विशेष क्षेत्र का त्योहार दूसरे क्षेत्र के दर्शकों के लिए अपरिचित हो सकता है, जबकि महत्वाकांक्षा, रिश्ते, अपराध, तकनीक या व्यक्तिगत संघर्ष जैसे विषय अधिक सार्वभौमिक माने जाते हैं। परिणामस्वरूप, व्यापक व्यावसायिक अपील के लिए सांस्कृतिक विशिष्टता कभी-कभी पीछे छूट जाती है।

लेकिन यहां एक महत्वपूर्ण सवाल उठता है–जब सिनेमा धीरे-धीरे अपने सांस्कृतिक परिवेश को खोने लगे तो क्या होता है?

समाज अपनी संस्कृति को केवल पुस्तकों और संग्रहालयों के माध्यम से सुरक्षित नहीं रखता। संस्कृति रोजमर्रा के अनुभवों, कहानियों, गीतों, भोजन, वेशभूषा, रीति-रिवाजों और सामूहिक स्मृतियों में जीवित रहती है। सिनेमा इन तत्वों को दृश्य और भावनात्मक रूप से संरक्षित करने की अनूठी क्षमता रखता है। एक फिल्म ऐसी परंपरा को अगली पीढ़ी तक पहुंचा सकती है जिसे वह पीढ़ी शायद उसी रूप में अनुभव न कर पाए।

त्योहार इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे केवल धार्मिक या पारंपरिक आयोजन नहीं होते। वे लोगों को मिलने, साथ बैठने, भोजन साझा करने, शुभकामनाएं देने, पुराने मतभेद भुलाने और रिश्तों को मजबूत करने का अवसर देते हैं। वे पीढ़ियों को जोड़ते हैं। दादा-दादी बच्चों को परंपराओं के बारे में बताते हैं, माता-पिता पारिवारिक संस्कार अगली पीढ़ी तक पहुंचाते हैं और समुदाय सामूहिक उत्सव में एक-दूसरे के करीब आते हैं।

जब सिनेमा ऐसे क्षणों को सार्थक ढंग से प्रस्तुत करता है, तो वह केवल मनोरंजन नहीं करता–वह सामाजिक इतिहास को भी दर्ज करता है।

पुरानी फिल्मों में त्योहारों के चित्रण को याद करें। किसी घर का सजा हुआ आंगन, पारंपरिक भोजन बनाते परिवार के सदस्य, नए कपड़े पहने बच्चे, एक-दूसरे के घर जाते पड़ोसी और वातावरण में गूंजता संगीत–ये दृश्य अपनापन और सामूहिकता का अनुभव कराते थे। ऐसे दृश्य लोगों की सामूहिक स्मृति का हिस्सा बन गए। अनेक दर्शकों के लिए सिनेमा सांस्कृतिक परंपराओं को देखने और समझने की खिड़की बन गया।

इसके विपरीत, आधुनिक सिनेमा में अक्सर अधिक व्यक्तिगत जीवन दिखाई देता है। मुख्य पात्र किसी बड़े शहर में अकेला रह सकता है, काम के दबाव से जूझ सकता है, रिश्तों की उलझनों से गुजर सकता है या व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में लगा हो सकता है। ये कहानियां गलत नहीं हैं; वे आधुनिक जीवन की वास्तविकताओं को सामने रखती हैं। लेकिन जब व्यक्तिगत जीवन और व्यक्तिवाद प्रमुख कथानक बन जाते हैं, तब संस्कृति का सामूहिक पक्ष अपेक्षाकृत कम दिखाई दे सकता है।

त्योहारों का बढ़ता व्यावसायीकरण भी एक महत्वपूर्ण कारण है। त्योहार अब बड़े उपभोक्ता आयोजनों का रूप लेते जा रहे हैं। विज्ञापन, खरीदारी अभियान, सोशल मीडिया ट्रेंड और ब्रांड प्रचार कई बार उत्सव की मूल भावना पर हावी हो जाते हैं। सिनेमा भी इसी व्यावसायिक वातावरण का हिस्सा है। ऐसे में यह खतरा पैदा होता है कि त्योहारों का गहरा सांस्कृतिक अर्थ उपभोग, विलासिता और दिखावे की तस्वीरों में बदल जाए।

त्योहार केवल महंगे कपड़ों, सजावट, उपहारों या पार्टियों के लिए याद नहीं किए जाने चाहिए। उनका वास्तविक महत्व रिश्तों, कृतज्ञता, समुदाय, परंपरा और साझा खुशी में है। सिनेमा में इतनी शक्ति है कि वह दर्शकों को इस अंतर का एहसास करा सके।

हालांकि हमें अतीत को पूरी तरह आदर्श भी नहीं मानना चाहिए। सभी पारंपरिक प्रथाएं समान रूप से समावेशी नहीं थीं और सामाजिक प्रगति के साथ अनेक परंपराओं में सकारात्मक बदलाव आवश्यक भी रहे हैं। केवल पुराना होने के कारण हर परंपरा को बचाए रखना जरूरी नहीं है। संस्कृति को समय के साथ विकसित होना चाहिए। उद्देश्य समाज को अतीत में स्थिर कर देना नहीं, बल्कि सार्थक मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए परंपराओं को समय के अनुरूप बदलने देना होना चाहिए।

यहीं समकालीन फिल्मकारों के सामने एक महत्वपूर्ण अवसर है।

सिनेमा केवल पुराने त्योहारों के दृश्यों को दोहराने के बजाय उन्हें आधुनिक कहानियों के साथ जोड़ सकता है। कोई फिल्म दिखा सकती है कि घर से दूर रहने वाला प्रवासी परिवार अपने त्योहार को किस तरह मनाता है। कोई कहानी शहर में पले-बढ़े बच्चों के अपने दादा-दादी की परंपराओं से दोबारा जुड़ने पर केंद्रित हो सकती है। कोई फिल्म अलग-अलग समुदायों के लोगों को मिलकर त्योहार मनाते हुए दिखाकर सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक सद्भाव का संदेश दे सकती है।

क्षेत्रीय सिनेमा की भूमिका यहां विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। भारत एक ही सांस्कृतिक परिदृश्य नहीं है, बल्कि असंख्य सांस्कृतिक परंपराओं का विशाल संगम है। हर क्षेत्र के अपने त्योहार, लोकगीत, भोजन, हस्तशिल्प और रीति-रिवाज हैं। पंजाब की लोहड़ी, केरल का ओणम, तमिलनाडु का पोंगल, असम का बिहू, महाराष्ट्र के गणेश उत्सव और देश के अनेक अन्य क्षेत्रीय पर्व कहानी कहने के लिए समृद्ध सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

डिजिटल युग सांस्कृतिक कहानियों के लिए नए अवसर भी पैदा कर रहा है। डिजिटल प्लेटफॉर्म केवल सिनेमाघरों की सीमाओं तक बंधे नहीं हैं। किसी एक क्षेत्र की कहानी देश और दुनिया के दूसरे हिस्सों के दर्शकों तक पहुंच सकती है। किसी दूसरे प्रदेश के दर्शक के लिए अपरिचित त्योहार भी एक रोचक सांस्कृतिक अनुभव बन सकता है।

युवा पीढ़ी को भी परंपराओं से पूरी तरह कटा हुआ मान लेना उचित नहीं है। युवा संस्कृति में रुचि ले सकते हैं, बशर्ते उसे आधुनिक, प्रामाणिक और रोचक तरीके से प्रस्तुत किया जाए। समस्या शायद रुचि की कमी नहीं, बल्कि सार्थक प्रस्तुति की कमी है।

स्कूल, परिवार और सांस्कृतिक संस्थाएं भी सिनेमा की भूमिका को मजबूत कर सकती हैं। बच्चों को केवल यह जानना पर्याप्त नहीं कि कोई त्योहार कैसे मनाया जाता है; उन्हें यह भी समझना चाहिए कि वह क्यों मनाया जाता है। त्योहारों से जुड़ी कहानियों, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सामाजिक मूल्यों को समझने से उत्सव केवल एक आयोजन न रहकर सांस्कृतिक शिक्षा का माध्यम बन सकता है।

सोशल मीडिया ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को एक नया मंच दिया है। जिन त्योहारों को मुख्यधारा के सिनेमा में कम स्थान मिलता है, वे छोटे वीडियो, तस्वीरों, डॉक्यूमेंट्री और स्वतंत्र रचनाकारों के माध्यम से लाखों लोगों तक पहुंच सकते हैं। सामान्य लोग भी अपनी परंपराओं के कथाकार बन सकते हैं। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का यह लोकतंत्रीकरण सकारात्मक परिवर्तन है।

फिर भी मुख्यधारा के सिनेमा की जिम्मेदारी महत्वपूर्ण बनी रहती है, क्योंकि लोकप्रिय फिल्में भाषा, फैशन, व्यवहार और सामाजिक कल्पना को प्रभावित करती हैं। जो चीज पर्दे पर बार-बार दिखाई देती है, वह परिचित बन जाती है; जो धीरे-धीरे पर्दे से गायब हो जाती है, वह सार्वजनिक चेतना में भी कम दिखाई देने लगती है।

इसलिए सिनेमा की जिम्मेदारी दोहरी है। उसे समाज को वैसा ही दिखाना चाहिए जैसा वह है, लेकिन साथ ही समाज को उन चीजों की याद भी दिलानी चाहिए जिन्हें वह भूलने के कगार पर है।

सिनेमा से त्योहारों की कम होती उपस्थिति अपने आप में कोई संकट नहीं है। संस्कृति केवल फिल्मों पर निर्भर नहीं है। त्योहार घरों, समुदायों, मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों, गुरुद्वारों, गलियों और सार्वजनिक स्थानों पर जीवित रहेंगे। लेकिन जब सिनेमा सांस्कृतिक कहानियां सुनाना बंद कर देता है, तो सांस्कृतिक स्मृति का एक महत्वपूर्ण माध्यम कमजोर जरूर हो जाता है।

इसका समाधान यह नहीं है कि हर फिल्म में जबरन कोई त्योहार का दृश्य शामिल किया जाए। आवश्यकता इस बात की है कि फिल्मकार भारत की सांस्कृतिक विविधता की समृद्धि को समझें और जब कहानी इसकी मांग करे, तब उसका संवेदनशील और सार्थक उपयोग करें।

सिनेमा का भविष्य आधुनिकता और परंपरा के बीच चुनाव का विषय नहीं होना चाहिए। दोनों साथ-साथ चल सकते हैं। तकनीकी रूप से विकसित और वैश्विक रूप से जुड़ा समाज भी पारिवारिक मेल-मिलाप, लोक परंपराओं, स्थानीय भाषाओं, पारंपरिक संगीत और सामुदायिक उत्सवों को महत्व दे सकता है।

वास्तव में श्रेष्ठ सिनेमा अक्सर तब जन्म लेता है जब पुराना और नया एक-दूसरे से संवाद करते हैं।

त्योहार बदलते परिवारों, प्रवास, पीढ़ियों के अंतर, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समानता, सामुदायिक सद्भाव और मानवीय रिश्तों पर प्रभावशाली कहानियां दे सकते हैं। वे केवल रंगीन पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि समाज की कहानी के महत्वपूर्ण पात्र बन सकते हैं।

सिनेमा समय के साथ बदलता है, क्योंकि समाज समय के साथ बदलता है। लेकिन बदलते सिनेमाई परिदृश्य में हमारे त्योहार किसी भूली हुई सांस्कृतिक विरासत की केवल सजावटी स्मृतियां बनकर न रह जाएं।

वे हमारी पहचान की जीवंत अभिव्यक्ति बने रहें–यह जिम्मेदारी केवल परिवार और समाज की नहीं, बल्कि सिनेमा की भी है। सिनेमा आगे बढ़े, लेकिन संस्कृति को पीछे छोड़कर नहीं। त्योहार समय के साथ बदलें, लेकिन अपनी आत्मा न खोएं। चुनौती यह सुनिश्चित करने की है कि जैसे-जैसे पर्दा आधुनिक होता जाए, उस पर दिखाई देने वाली हमारी सांस्कृतिक स्मृतियां चुपचाप गायब न हों।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात गणितज्ञ अकादमिक संपादक, FnBworld.com
स्ट्रीट कौर, चांद एमएचआर, मलोट, पंजाब-152107
मोबाइलः 9465682110

किताबों कि दुनियाँ
डॉ मीतू सिन्हा का पहला उपन्यास - 'शक्ति'

डॉ मीतू सिन्हा की पुस्तक शक्ति 2016 में लॉर्ड्स पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित की गई। यह एक उपन्यास सीखा है जो एक दिव्यांग बच्चों की संघर्ष की कहानी बयां करती है। डॉ मीतू लिखती है कि इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा उन्हें शिक्षा परियोजना में समावेशी शिक्षा प्रभाग देखते हुए मिली, जहां उन्होंने दिव्यांग बच्चों के संघर्ष को बहुत करीब से देखा। उन्होंने जीवन के इस संकट से निपटने के लिए मनोबल और दृढ़ संकल्प जैसे भावों पर जोर दिया है।

प्रस्तुत पुस्तक वेद प्रकाश नामक युवा की कथा है जो एक सफल व्यक्ति है और अपने अतीत में अपने संघर्ष में अपनी सफलता की कहानी को याद करता है। कोई याद करता है कि आज वह सफल है तो सभी उससे मिलना चाहते हैं पर जब वह शारीरिक रूप से कमजोर था तो सब उसका मजाक उड़ाते थे। वेद की मां हमेशा उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, उसके शिक्षक उसके जीवन को एक नया मोड़ देते हैं और वह जीवन काल में मिली अपनी शारीरिक दुर्बलता को भूलकर अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करता है। उसकी प्रेमिका विद्या भी हर कदम पर उसके साथ है, जो कॉलेज में होने वाले

उपहास से उसे दूर रखती है।

वेद मात्र अपने लक्ष्य को ही प्राप्त नहीं करता वह दूसरों को भी इसके लिए सहायता करता है और दिव्यांगों का मन से सम्मान करता है। पुस्तक में कहीं ना कहीं नारी अधिकारों की भी चर्चा है। वेद सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुंचकर भी अपने प्रेम को नहीं भूलता और एक विधवा स्त्री से विवाह करता है।

पुस्तक में समय के अनुसार समाज के लोगों के बदलते व्यवहार का बहुत ही रूचिपूर्ण और यथार्थवादी चित्रण है।

पुस्तक वास्तव में प्रेरणादायक, मनोबल बढ़ाने वाली और जीवन में सही गलत के निर्णय की प्रज्ञा को जागृत करने वाली है। पुस्तक के अंत में दिए गए सभी दिव्यांगों के उदाहरण जो अपने-अपने क्षेत्र में सफल हुए हैं, सराहनीय है। डॉ मीतू ने विज्ञान, साहित्य, कला तथा आध्यात्म के क्षेत्र से उदाहरण उठाए हैं और मनोबल को शारीरिक दुर्बलता के ऊपर रखा है। अंत में उन्होंने कविता भी लिखी है जिसमें दिव्यांगों के साथ रहने व समावेशी वातावरण बनाने की बात कही गई है। कुल मिलाकर कहां जाए तो यह पुस्तक पढ़ने और पढ़ाने योग्य है। निश्चित रूप से शिक्षकों को और अपने लक्ष्य की प्राप्ति में लगे छात्रों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए

हरिप्रकाश पाण्डेय, संस्थापक साहित्य 24

इस बार राखी ने बांधा नहीं मुक्त कर दिया

राखी से एक दिन पहले मंजू दीदी चली गई... कुछ रिश्ते जीवन में केवल रिश्ते नहीं होते, वे हमारी सांसों का हिस्सा बन जाते हैं।
बहन भी ऐसा ही रिश्ता है।कहने को वे मेरे भुआजी की सबसे छोटी बेटी थीं पर इंदौर में ही होने से उन्होंने सदैव मुझे सगी बहन सा लाड़ दुलार दिया।हम दोनों की वय में कुछ ही महीनों का अंतर था। मुझे बहनों ने कभी एहसास ही नहीं होने दिया कि मेरी कोई सगी बहन नहीं है।बहन हो तो लगता है जैसे बचपन अभी कहीं गया ही नहीं। उसकी आवाज में बचपन की शरारतें सुनाई देती हैं, उसकी हँसी में माँ के स्नेह की खुशबू आती है और उसके आने से लगता है कि बीते हुए दिन फिर लौट आए हैं।
बहन मंजू मेहता दीदी भी मेरे लिए ऐसी ही थी। मित्र भी,बहन भी और ममत्व भी।हर रक्षाबंधन पर उनका आना जैसे तय होता था।राखी आने से पहले ही मन में एक विश्वास रहता था
मंजू दीदी आएंगीङ्घ राखी बांधेगीङ्घ और कुछ देर के लिए फिर वही बचपन लौट आएगा।
वह आती थीं तो घर में एक अलग ही रौनक हो जाती थी।बोलती भी तो बहुत थीं, मेरी तरह।हाथ में राखी होती थी और चेहरे पर वही अपनापन।वह मेरी कलाई पर राखी बांधती थी और मैं हर बार सोचता था,
कितनी जल्दी समय बीत गया।कभी हम बच्चे थे।अब उनके दोनों बच्चों अनंत और आयुषी का भी विवाह हो गया।कभी हम गर्मी की छुट्टियों में भागसीपूरा उज्जैन की गलियों में सायकल चलाते थे,एक-दूसरे से लड़ते थे, रूठते थे, फिर थोड़ी देर बाद ऐसे मिल जाते थे जैसे कुछ हुआ ही न हो।पर समय हमें बड़ा करता गया। जिम्मेदारियां बढ़ती गईं।घर अलग हुए, रास्ते अलग हुए, जिंदगी अपनी-अपनी व्यस्तताओं में उलझती गईङ्घ लेकिन राखी का धागा कभी कमजोर नहीं हुआ।हर साल वह आती रहीं और रक्षाबंधन के बाद एक और इंतजार रहता था भाईदूज का।वह जरूर बुलाती थी।उनका बुलाना भी कितना अपनापन लिए होता था।विकास, भाईदूज पर आना जरूर... यह सिर्फ एक निमंत्रण नहीं होता था।यह उस रिश्ते की पुकार थी, जो उम्र बढ़ने के साथ और गहरा होता जाता है।मैं व्यस्तताओं में घिरा सोचता था,अभी तो जिंदगी बहुत लंबी है।अगली राखी फिर आएगी।अगली भाईदूज फिर आएगी।पर अब लग रहा सब आएंगे मंजू दीदी फिर नहीं आएंगी।
जिंदगी ने इस बार कोई अगली तारीख नहीं दी।रक्षाबंधन के ठीक एक दिन पहले मंजू दीदी चली गई।यह कैसी विडंबना है?जिस बहन को अगले दिन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधनी थी,
वह एक दिन पहले ही हमेशा के लिए चली गई।राखी का त्योहार दरवाजे पर खड़ा थाङ्घऔर बहन

उस दरवाजे से बहुत दूर चली गई।अब घर में राखी आएगी,लेकिन मंजू दीदी नहीं आएंगी।कलाई पर राखी बांधने वाला उनका हाथ नहीं होगा।
फोन बजेगा तो शायद एक पल के लिए मन कहेगा,
मंजू दीदी का फोन होगा....
लेकिन फिर अचानक सच सामने खड़ा हो जाएगा।नहींङ्घ
अब उनका फोन कभी नहीं आएगा।भाईदूज आएगी तो शायद किसी दिन अनायास मन उनका नंबर ढूंढेगा।फिर याद आएगा अब मंजू दीदी नहीं बुलाएंगी।
उनकी वह आवाजङ्घ
विकास, इस बार भाईदूज पर जरूर आनाङ्घ।मैं सोचता था इस बार क्यों हर बार ही, पर
अब मेरे कानों में वह आवाज कभी सुनाई नहीं देगी।
मंजू दीदी, आपको पता है? इस बार राखी पर मेरी कलाई शायद खाली रह जाएगी,
लेकिन उससे भी ज्यादा खाली हो गया है मेरा मन।
आपने राखी का धागा बांधना बंद नहीं किया हैङ्घ बस अब वह धागा दिखाई नहीं देगा।
वह मेरे हाथ से उतरकर मेरे दिल में बंध गया है।अब जब भी राखी आएगी, मैं बाजार में राखियां देखूंगा तो आपका चेहरा याद आएगा।जब किसी बहन को अपने भाई की कलाई पर राखी बांधते देखूंगा, तो मेरी आंखें आपको खोजेंगी।जब भाईदूज आएगी, और किसी बहन की आवाज सुनाई देगी–
भाई, आना जरूर...
तो शायद मेरा दिल भर आएगा।क्योंकि अब मेरे पास आने का कहने के लिए मंजू दीदी नहीं है।
आपने जाते-जाते मुझे यह समझा दिया कि हम रिश्तों को कितना सहज मान लेते हैं।
हम सोचते रहते हैं,
अभी तो समय हैङ्घफिर मिल लेंगेङ्घफिर बात कर लेंगेङ्घअगली राखी पर साथ बैठेंगेङ्घअगली भाईदूज पर मिलेंगे,लेकिन जिंदगी कभी-कभी अगली बार का मौका ही नहीं देती।
इसलिए आज आपकी याद के साथ एक बात बहुत गहराई से समझ में आ रही है,रिश्तों को जी लेना चाहिए,टालना नहीं चाहिए।अपनों से कह देना चाहिए कि वे हमारे लिए कितने महत्वपूर्ण हैं।आप चली गईं लेकिन अपने पीछे राखी का एक ऐसा धागा छोड़ गईं, जो अब मेरी पूरी जिंदगी मेरे साथ रहेगा।आपकी याद में मेरी आंखें नम होंगी,
आपके नाम पर गला रुंधेगा,आपकी आवाज याद आएगी,आपकी हंसी सुनाई देगीङ्घऔर हर बार दिल यही कहेगा,इस बार रक्षाबंधन पर आप नहीं आओगी।इस बार भाईदूज पर आप नहीं बुलाओगी।लेकिन मैं हर साल आपको वहीं खोजूंगा,जहां आप सबसे ज्यादा दिखाई देती हो।
मेरी स्मृतियों में,
मेरे बचपन में,
मेरी कलाई पर बंधे उस राखी के धागे में,
और मेरे दिल में।
बहन, आपको अंतिम विदाई कैसे दूं?बहन को विदा नहीं किया जाता।बहन तो जीवन भर भाई के भीतर रहती है।आप भी रहना।हर राखी पर,हर भाईदूज पर,हर उस दिन जब मुझे आपकी याद आए।आपकी राखी अब धागा नहीं रही,वह मेरी जिंदगी की सबसे अनमोल स्मृति बन गई है।

बहन!!! आपको अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि ईश्वर आपकी आत्मा को शांति दे।

चिंतन (3)

अनबँधी कलाई का मौन

एक समय था जब तक हाथ में घड़ी न हो आदमी अधूरा सा लगता था । अल्ग अल्ग ब्रैंड की घड़ियाँ का श्रिंगार ही बायं हाथ की ही नहीं आदमी की भी शोभा बढ़ाती थीं। एच एम टी , टाइटन या सीको घड़ीयॉ आदमी अपनी कमीज की बाजू फोल्ड करके लोगों को दिखाते हुए घड़ी पहनते थे । यह समय भी काफी लम्बा रहा क्योंकि उसका कोई तोड़ ही नहीं था । समय बदला और घड़ियों में शामिल हो गई क्वार्टज घड़ियाँ । स्स्ती भी हो गई और सुन्दर भी । दिन और तारीक भी बताने लग गई । यूज एण्ड थ्रो घड़ियाँ बहार लेकर तो आई ही , छा भी गई । टेबल घड़ियाँ की अपनी जगह थी । क्योंकि अलार्म लगाने के लिए टेबल घड़ियाँ बड़ी अच्छी थी । रात के समय देखने के लिए टेबल घड़ियाँ ही बेहतर थीं । बच्चों की घड़ियाँ तो 10-10, 20-20 रुपयों में आने लग गई । लोग तो घड़ी को गिफ़्ट लेने से भी कतराने लगे । क्योंकि मार्किट में घड़ियों में भरमार सी आ गई थी । फिर समय बदला और मोबाईल ने एंट्री कर ली । एक से एक अच्छा मोबाईल । तब एक और क्रांति आई समय देखने की । घड़ियाँ तो उतर ही चुकी थी । और समय देखने के लिए मोबाईल आगे आ गये । वैसे तो हर आदमी के पास मोबाईल आ गया । और समय देखने के लिए मोबाईल । बंद स्क्रीन में भी समय दिखता है । समय पूछने वाले लोग भी कम ही रह गये । क्योंकि वह समय देखने के लिए मोबाईल देखने लग गये।
समय पूछ लिया अगर किसी ने तो आदमी अपना मोबाईल देखकर ही समय बताता था ।
समय ने करवट बदली और अब फिर घड़ियों का प्रचलन शुरू हो चुका है । फिर से लोग महंगी से मंहगी घड़ियाँ खरीद रहे हैं और बड़े चाव से घड़ी दिखाने का प्रयास करते हैं ।
इस से लगता है एक बार फिर से पुराने जमाने की तरफ समय लौट रहा है । अच्छा भी है । पुराना समय तो अच्छा ही था । और हम फिर पुराने समय की तरफ लौट रहे हैं ।
बाकी देखते हैं और कौन सा नया गेजेट आता है मार्केट में । मगर मुझे नहीं लगता कोई और गेजेट घड़ियों का प्रयावाची बन सके । बाकी कुछ कह भी नहीं सकते । आई टी में जबरदस्त क्रॉति तो आ ही चुकी है । नये नये प्रयोग हो रहे हैं । नये नये गेजेट आ रहे हैं । बस है तो केवल और केवल इन्तजार नयेपन का । आओ चलो मिलकर इन्तजार करते हैं

जिनकी बहन नहीं, उनकी राखी कैसी?
राखी आने से पहले बाजारों में रंग उतर आता है - लाल, पीले, हरे, सुनहरे धागों में जैसे बचपन अपनी उँगलियाँ फँसाकर किसी पुराने रिश्ते को फिर से पुकारता हो। दुकानों के बाहर छोटी-छोटी हथेलियाँ राखियाँ चुनती हैं और मिठाइयों की गंध में घुली होती है बहनों की हँसी। घर-घर थालियाँ सजती हैं, रोली मुस्कुराती है, अक्षत प्रतीक्षा करते हैं और कलाईयाँ एक पवित्र स्पर्श की राह देखती हैं।
लेकिन - हर घर में राखी की आहट एक जैसी नहीं होती। कुछ घरों में एक कलाई होती है, जिसके लिए कोई राखी नहीं आती। वह कलाई त्योहार के दिन भी वैसी ही रहती है, चुप, अकेली, अनबँधी।
वहाँ न कोई आवाज होती है - भैया, हाथ आगे करोङ्घ न किसी नन्हे हाथ की उँगलियाँ कलाई पर धागा तलाशती हैं। न माथे पर रोली का स्पर्श, न आँखों में वह परिचित शरारत, न अधिकार से माँगा गया कोई छोटा-सा उपहार। बस एक दिन होता है, जो दूसरों के घरों में त्योहार बनकर आता है और उसके भीतर एक प्रश्न बनकर ठहर जाता है -
जिनकी बहन नहीं होती, उनकी राखी कैसी?
शायद वह भाई भीड़ में चलते हुए किसी दुकान के सामने रुकता होगा। बहुत देर तक राखियों को देखता होगा। किसी धागे में उसे अपना बचपन दिखाई देता होगा - एक ऐसा बचपन, जो कभी आया ही नहीं।
वह सोचता होगा - काश! कोई छोटी-सी आवाज उसे ह्यभैयाङ्घ कहकर पुकारती। काश! कोई उसकी किताब छीनकर भागती, उसकी शिकायत माँ से करती और फिर उसी शाम चुपके से उसके हिस्से की मिठाई बचाकर रख देती। काश! कोई उसकी कलाई पर धागा बाँधते हुए उसकी आँखों में आँखें डालकर कहती -
भैया, हमेशा मेरे साथ रहना।
लेकिन हर ह्यकाशङ्घ किस्मत की किताब में पूरा नहीं होता। कुछ रिश्ते हमारी चौखट तक आ ही नहीं पाते, कुछ होते हुए भी दूरियों में खो जाते हैं और कुछ रिश्ते जन्म से नहीं मिलते - वे जीवन की राह में अचानक मिल जाते हैं।
फिर मन पूछता है -

क्या राखी केवल उन कलाईयों का त्योहार है, जिन पर रक्त का रिश्ता पहले से लिखा हुआ है?
मैं सोचता हूँ - नहीं।
राखी शायद धागे से कहीं बड़ी चीज है। वह उस क्षण का नाम है, जब कोई किसी दूसरे के अकेलेपन को देखता है और बिना किसी

स्वार्थ के उसके पास जाकर कहता है.....
तुम अकेले नहीं हो।
रिश्ते हमेशा जन्म से नहीं मिलते। कभी वे एक मुस्कान से जन्म लेते हैं, कभी किसी की मदद करते हुए एक अदृश्य डोर दो मनों के बीच बँध जाती है। कभी कोई बच्ची किसी अनजान भाई की कलाई पर राखी बाँध देती है और अचानक दो अजनबी एक रिश्ते की भाषा सीख जाते हैं।
तब समझ आता है - रक्त रिश्ते की पहचान हो सकता है, पर रिश्ते का पूरा अर्थ नहीं। कभी-कभी अपनापन ही रक्त से गाढ़ा हो जाता है।
इसलिए इस बार राखी पर, जब तुम्हारी कलाई पर कोई धागा बाँधे, एक क्षण के लिए उस भाई को भी याद करना, जिसकी कलाई आज भी किसी अपने के स्पर्श की प्रतीक्षा में है। शायद उसके घर राखी की थाली न सजी हो, शायद मोबाइल पर बहन का संदेश न आया हो, शायद उसने भी दूसरों की कलाईयाँ देखी हों और अपनी कलाई चुपचाप जेब में छिपा ली हो।
उसके पास जाकर बस इतना कहना भैया, आज आपकी कलाई सूनी नहीं रहेगी।
देखना, कभी-कभी एक वाक्य वर्षों की चुप्पी से बड़ा होता है। एक धागा सालों के अकेलेपन पर हाथ रख सकता है और एक छोटा-सा अपनापन किसी के भीतर बुझती हुई रोशनी को फिर से जगा सकता है।
राखी सिर्फ.रक्षा का वचन नहीं है। यह उस मन की भी रक्षा है, जो भीतर से अकेला है; उस विश्वास की रक्षा है, जिसे दुनिया की भीड़ अक्सर कुचल देती है; उस संबंध की रक्षा है, जिसे नाम की आवश्यकता नहीं - सिर्फ. सच्चाई की आवश्यकता है।
हम अक्सर कहते हैं - भाई बहन की रक्षा करेगा। लेकिन बहन भी तो भाई की बहुत-सी चीजों की रक्षा करती है -उसके बचपन की, उसकी हँसी की, उसके रहस्यों की, उसकी नादानियों की और उसके टूटे हुए मन की। शायद सबसे अधिक उस एहसास की कि इस विशाल संसार में कोई एक व्यक्ति ऐसा है, जिसके लिए वह विशेष है। इसीलिए राखी का रिश्ता एकतरफा नहीं। यह दो कलाईयों के बीच बँधा हुआ धागा नहीं - यह दो आत्मीयताओं के बीच जगा हुआ विश्वास है।
तो जिनकी बहन नहीं, उनकी राखी भी होनी चाहिए - किसी छोटी हथेली के स्नेह से, किसी पड़ोस के अपनत्व से, किसी विद्यालय की सरल परंपरा से, या किसी ऐसे रिश्ते से जिसे समाज ने नाम भले न दिया हो, पर दिल ने स्वीकार कर लिया हो।
क्योंकि हर रिश्ता वंशावली में दर्ज नहीं होता। कुछ रिश्ते स्मृतियों में लिखे जाते हैं, कुछ आँखों की नमी में, कुछ एक मुस्कान में और कुछ - सिर्फ.एक धागे में।
इस बार राखी बाँधते हुए केवल कलाई मत बाँधना - एक विश्वास बाँधना, एक वचन बाँधना, एक ऐसा एहसास बाँधना जिससे सामने वाला अपने जीवन के किसी कठिन दिन में यह याद कर सके -
दुनिया में कोई तो है, जो मुझे अपना मानता है।
तभी राखी अपने अर्थ तक पहुँचेगी।
तभी त्योहार केवल एक तारीख नहीं रहेगा। तभी मिठाई की मिठास किसी अकेले मन तक पहुँचेगी और किसी सूनी कलाई पर खुशियों की रोशनी उतरेगी।

और शायद तब वह भाई, जिसने वर्षों से अपनी कलाई को सूना देखा है, पहली बार उसे देखकर मुस्कुराएगा। वह नहीं पूछेगा - मेरी राखी कैसी हो? वह बस अपनी कलाई को देखेगा और धीरे से कहेगा -
आज यहाँ धागा नहीं, किसी का विश्वास बँधा है।
और उस क्षण राखी बहन से भाई तक जाने वाली एक डोर नहीं रहेगी; वह मनुष्य से मनुष्य तक जाने वाली मानवता की राह बन जाएगी।
उस दिन जिसकी बहन नहीं, उसकी भी राखी होगी। जिसकी कलाई सूनी है, उसके लिए भी स्नेह की डोर होगी। जिसके मन में खालीपन है, उसके लिए भी किसी का अपनापन होगा।
क्योंकि -
राखी की सबसे सुंदर डोर वही नहीं, जो कलाई पर दिखाई दे;
सबसे सुंदर डोर वह है, जो किसी के अकेलेपन तक पहुँचे
और उसके मौन में उतरकर धीरे से कह दे.....
तुम अकेले नहीं हो।
और शायद यही राखी का सबसे पवित्र अर्थ है, यही रिश्तों की सबसे सुंदर भाषा, यही त्योहार की सबसे उजली रोशनी और यही - एक अनबँधी कलाई की सबसे मौन प्रार्थना।

रूपेश कुमार
चैनपुर, सीवान, बिहार

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर डॉ. सविता चड्ढा जी के जन्मदिन पर विशेषांक पत्रिका का लोकार्पण

28 अगस्त 2026 को रक्षाबंधन के पावन अवसर पर हरियाणा गौरव सम्मान से सम्मानित, विश्वविख्यात साहित्यकार डॉ. सविता चड्ढा के जन्मदिन के शुभ अवसर पर उनके निवास पर हिंदी-उर्दू अदबी संगम की ह्यसामाजिक शिख्सयत विशेषांकङ्घ पत्रिका के प्रवेशांक का लोकार्पण किया गया।
इस विशेषांक का संपादन हिंदी-उर्दू अदबी संगम के संस्थापक एवं अध्यक्ष डॉ. सैयद अली अख़्तर नकवी ने किया है। पत्रिका को आकार देने में कार्यकारी संपादक अजीमा नकवी, संपादकीय परामर्श इंदुकांत अंगिरस तथा संपादकीय सहयोग शाहाना परवीन का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
इस अवसर पर अदबी संगम परिवार की ओर से डॉ. सविता चड्ढा को जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएँ दी गईं।
कार्यक्रम में डॉ. सविता चड्ढा , इंदुकांत अंगिरस , डॉ. कल्पना पाण्डेय , डॉ. राकेश सिंह , डॉ. अंजु अग्रवाल , शकुंतला मित्तल , चंद्रकांत मित्तल , अब्दुल वाहिद अंसारी , नाजरीन अंसारी ज सोनल चड्ढा तथा अजीमा नकवी सहित अनेक साहित्यकार एवं गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।
इस अवसर पर सभी अतिथियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए और डॉ. सविता चड्ढा के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं। डॉ. सविता चड्ढा ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाशित इस विशेषांक के लिए संपादक मंडल का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का अत्यंत गरिमापूर्ण एवं खूबसूरत संचालन शकुंतला मित्तल ने किया।
कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष डॉ. सैयद अली अख़्तर नकवी ने कार्यक्रम को सफल बनाने तथा रक्षाबंधन जैसे पावन पर्व के दिन अपनी व्यस्तताओं के बावजूद उपस्थित होकर इस खुशी में शामिल होने के लिए सभी अतिथियों का हृदय की गहराइयों से आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया। उन्होंने उन सभी शुभचिंतकों और साहित्यकारों के प्रति भी विशेष आभार व्यक्त किया, जो किसी कारणवश कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके, लेकिन फोन एवं व्हाट्सऐप के माध्यम से इस खुशी में जुड़े रहे और अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

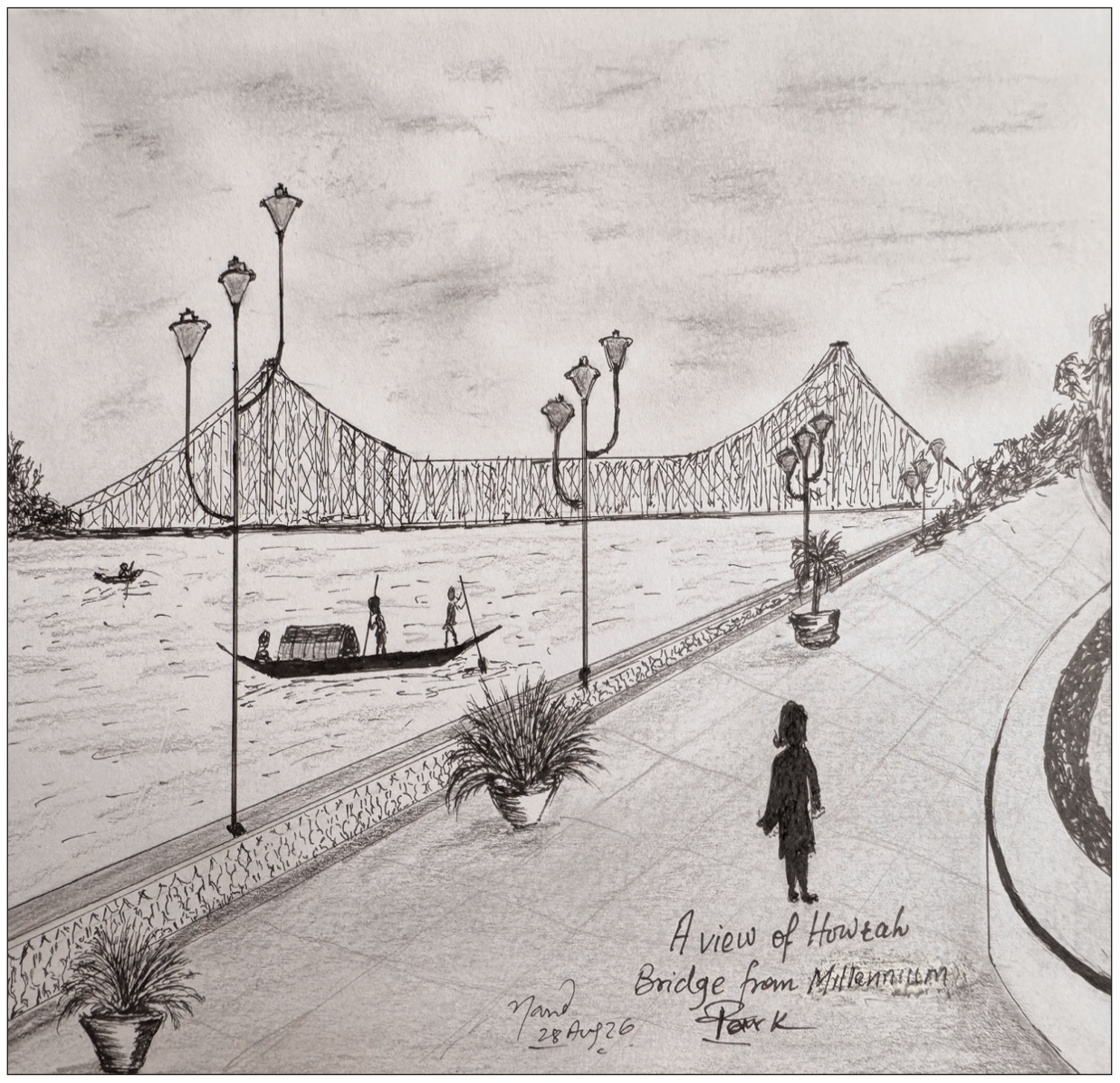

A view of Howrah Bridge from Millennium Park

डिजिटल साहित्य २४ पत्रिका-डिजिटल संस्करण-मीडिया पंचायत न्यूज पोर्टल दिल्ली कार्यालय २४ आदर्श गली, पालमगाँव नई दिल्ली, प्रथम तल ११००४५
नोट- उपर्युक्त ई पेपर को अवैध रूप से छपवाना कानूनन अपराध है।
Email-saahitya24@gmail.com website- www.sahitya24.com whatsapp -9315701112